International Journal of Advanced Educational Research
www.educationjournal.org
ISSN: 2455-6157
Received: 29-11-2021, Accepted: 13-12-2021, Published: 30-12-2021
Volume 6, Issue 6, 2021, Page No. 22-25

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान कला एवं वाणिज्य संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की संवेदी अधिगम शैलियो का तुलनात्मक अध्ययन

मृदुला शर्मा[1], डॉ. भुवन चंद्र महापात्रा[2]
[1] शोधार्थी, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिंबरेवाला विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, प्रोफ़ेसर, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिंबरेवाला विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

सारांश
उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान,कला एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों कीसंवेदी अधिगम शैली (दृश्य, श्रव्य एवं गतिज) प्राथमिकताओं का तुलनात्मक अध्ययन उनके परिवेश के आधार पर किया गया। शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध में तीनों संकायो के कक्षा ग्यारहवीं के 600 (विज्ञान–200,कला–200 एवं वाणिज्य–200) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। शोधार्थी द्वारा प्रदत्त एकत्रीकरण हेतु स्वनिर्मित प्रमापिकृत अधिगम शैली मापनी का प्रयोग किया गया। अधिगम शैली मापनी की विश्वसनीयता क्रोनबेक अल्फा गुणांक द्वारा दृश्य(0.856), श्रव्य(0.710) तथा गतिज(0.720), ज्ञात की गई जो कि मापनी के पदों के मध्य एक सुसंगत आंतरिक संगतता को दर्शाती है। शून्य परिकल्पनाओं की जांच (0.05 सार्थकता स्तर) अयुगल टी परीक्षण द्वारा की गई। शोध परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विज्ञान,कला एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की दृश्य श्रव्य एवं गतिज संवेदी अधिगम शैली प्राथमिकताओं मे सार्थक अंतर पाया जाता है।

मूल शब्द: उच्च माध्यमिक स्तर,शहरी एवं ग्रामीण परिवेश, विज्ञान कला एवं वाणिज्य संकाय, संवेदी अधिगम शैली।

प्रस्तावना
हम सभी जानकारी या ज्ञान को ग्रहण करने के लिए ज्ञानइंद्रियों का उपयोग करते है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की ज्ञान ग्रहण करने हेतु इंद्रिय प्राथमिकता होती है जो उसकी संवेदी अधिगम शैली प्राथमिकताएं कहलाती है। किसी भी नए ज्ञान को सीखने में हमारी संवेदी प्राथमिकताएं अहम भूमिका निभाती है। अधिगम करते समय हमारा जो संवेदी अंग अधिगम हेतु अधिक प्रभावी रहता है,वही हमारी अधिगम शैली होती है। हम सभी किसी जानकारी को मुख्यतः तीन तरीकों से यथा देखकर, सुनकर या स्वयं करके सीखना पसंद करते हैं। इस आधार पर तीन प्रकार की अधिगम शैलियां होती है दृश्य, श्रव्य एवं गतिज अधिगम शैली। यह अधिगम शैलियां सीखने का कोई भौतिक साधन नहीं है और न ही कोई विधि है यह तो विद्यार्थियों का स्वयं का कौशल है जिसे वह कुछ सीखने के दौरान अपनाता है।कुछ विद्यार्थी मौखिक रूप से, कुछ लिखकर और जबकि कुछ व्यवहारिक कार्यों को करके ज्ञान को संसाधित करने में सरलता अनुभव करते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005) के अनुसार बच्चे व्यक्तिगत स्तर पर एवं दूसरों से विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। बच्चे स्वयं अनुभव द्वारा, गतिविधियों, प्रयोग, पढ़ने, विचार विमर्श करने, पूछने, सुनने, मनन करने तथा लेखन अभिव्यक्ति से प्रज्ञता प्राप्त करते हैं। किसी एक कक्षा के सभी विद्यार्थी अधिगम या सीखने हेतु स्वयं के ज्ञान और अभी क्षमताओं में भिन्नता रख सकते हैं। एक ही कक्षा में कुछ विद्यार्थी पाठ को अध्यापक द्वारा मौखिक रूप से पढ़ाए जाने पर समझ पाते हैं तो कुछ विद्यार्थियों को अध्यापक द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करने पर ही पाठ समझ में आता है और कक्षा में कुछ ऐसे भी विद्यार्थी होते हैं जो अध्यापक द्वारा या स्वयं क्रिया के द्वारा पाठ को अधिक अच्छे से समझ पाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षार्थी के अधिगम का कोई ना कोई प्राथमिक तरीका होता है जिसे वह नए ज्ञान या सूचनाओं को अवशोषित आधारित करने के लिए प्रयुक्त करता है यही तरीका उसकी अधिगम शैली होती है। हॉल (2005) के अनुसार व्यक्तिक भिन्नताओं को समझने का सर्वोत्तम तरीका उनकी अधिगम शैलियों को समझना है। विद्यार्थी की अधिगम शैली यह नहीं बताती कि वे क्या सीखते हैं बल्कि यह बताती है कि वह कैसे सीखना पसंद करते हैं या उन्हें कैसे सीखना आसान लगता है। अधिगम शैलियों के आधार पर हम विद्यार्थियों को जड या बुद्धिमान में विभाजित नहीं कर सकते हैं और ना ही किसी अधिगम शैली को अधिक अच्छी या कम अच्छी में बांट सकते हैं। यह तो केवल विद्यार्थियों के सीखने का एकमात्र तरीका है। नेत्रवती और दलिया (2019) के अनुसार विद्यार्थी की अधिगम शैलियां एक संकेतक के रूप में कार्य करती है कि वह सीखने के बाद वातावरण को कैसे देखता, समझता और उसके साथ कैसे अंतः क्रिया और प्रतिक्रिया करता है।

मनोवैज्ञानिक जेबी वाटसन ने कहा है कि विद्यार्थी के विकास में परिवेश का विशेष महत्व होता है विद्यार्थी का जिस परिवेश में पालन पोषण होता है वहां की सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं भौगोलिक दशाएं दशाओं का प्रभाव विद्यार्थी के अधिगम पर अवश्य पड़ता है प्रत्येक विद्यार्थी विशेष शैलियों के प्रति कुछ प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है लेकिन यह अधिगम शैलियां जैविक विशेषताओं के साथ–साथ परिवेश, अनुभव, व्यक्तिगत अनुभव, परिपक्वता स्तर, संस्कृति और विकास से प्रभावित होती रहती है।अतः परिवेश के महत्व को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा शहरी व ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों को शोध में सम्मिलित किया गया।

नजर (2017) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली प्राथमिकताओं का अध्ययन ज्ञात किया कि माध्यमिक स्तर के अधिकांश विद्यार्थी दृश्य अधिगम शैलीअपनाते हैं, इसके बाद श्रव्य और सबसे कम गतिज अधिगम शैली को अपनाते हैं।शहरी,ग्रामीण तथा अर्ध शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। नेत्रवती एवं दलिया (2019) ने अपने शोध द्वारा ज्ञात किया कि कला, विज्ञान और वाणिज्य संकाय के सभी विद्यार्थी मुख्य रूप से दृश्य अधिगम शैली अपनाते हैं।

रवंडाले,अच्युतन एवं अन्य (2020) द्वारा महाराष्ट्र के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली जानने का प्रयास किया गया। प्रदत्त विश्लेषण मे शहरी क्षेत्र के 33ः विद्यार्थी दृश्य, 13ः विद्यार्थी श्रव्य और 4ः विद्यार्थी गतिज अधिगम शैली का प्रयोग करते पाये गये जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 27ः श्रव्य, 21ः दृश्य और 2ः गतिज अधिगम शैली वाले थे।

शोध उद्देश्य

उद्देश्य 1

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उद्देश्य 2

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों कीदृश्य,श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उद्देश्य 3

उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

परिकल्पना H01

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य,श्रव्य और गतिज अधिगम शैली के उपयोग मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना H02

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों कीदृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली के उपयोग मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना H03

उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों कीदृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली के उपयोग मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध मे प्रयुक्त विधि

शोध समस्या की प्रकृति के आधार पर वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोध अध्ययन हेतु किया गया।

जनसंख्या / समिष्ट

शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षा 11 के विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को शोध समिष्टके रूप में रखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे सरल यादृच्छिक विधि द्वारा बीकानेर जिले के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11वीं विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय के कुल 600 (विज्ञान=200, कला=200 एवं वाणिज्य=200) विद्यार्थियों का चयन शोध अध्ययन हेतु किया गया।

शोध उपकरण

शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रमापिकृत लिंकर्ट 5 बिंदु स्केल आधारित अधिगम शैली मापनी का प्रयोग किया गया। जिनकी विश्वसनीयता क्रोनबेक अल्फा गुणांक के आधार परदृश्य, श्रव्य तथा गतिज अधिगम शैली के पदों के लिए क्रमशः0.856, 0.710 तथा 0.720 प्राप्त हुई, जो आंतरिक संगतता का एक स्वीकार्य मान है।

संख्यिकीय प्रविधियां

सांख्यिकी विश्लेषण SPSS 16.0 द्वारा अयुगल टी परीक्षण किया गया। जिसमे P मूल्य<0.05 के सांख्यिकी सार्थकता स्तर को लिया गया।

प्रदत्तो का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

(N-200)

Visual learning Style					auditory learning Style			Kinesthetic learning Style		
Residence	No.	[Mean± SD]	't' value	P value	[Mean± SD]	't' value	P value	[Mean±SD]	't' value	P value
Rural area	100	56.85±3.22	1.633, df=198	0.004*	51.27±4.60	6.645, df=198	0.001*	36.76±3.83	-12.969, df=198	0.001*
Urban area	100	64.46±7.88			46.64±5.22			45.71±5.74		

Unpaired t test applied

P value < 0.05 was taken as statistically significant

विश्लेषण–विज्ञान संकाय के ग्रामीण व शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य अधिगम शैली के मध्यमान क्रमश 65.85±3.22 तथा 64.46±7.88 प्राप्त हुए। इनका पी मूल्य 0.004 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया। (p<0.05)। इन विद्यार्थियों के श्रव्य अधिगम शैली के मध्यमान क्रमश 51.27±4.60 तथा 46.64±5. 22 पाये गये जिसमे 0.05 सार्थकता स्तर पर अंतर पाया गया(P=0.001) और इनके गतिज अधिगम शैली के मध्यमानो मे (ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों का मध्यमान 36.76±3.83 तथा शहरी परिवेश के विद्यार्थियों का मध्यमान 45.71±5.74) सार्थक अंतर पाया गया (P=0.001)। अतः शून्य परिकल्पना H01–उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। अस्वीकृत की गई।

तालिका 2: उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

(N-200)

Visual learning Style					auditory learning Style			Kinesthetic learning Style		
Residence	No.	[Mean±SD]	't' value	P value	[Mean±SD]	't' value	P value	[Mean±SD]	't' value	P value
Rural area	100	45.58±5.85	-4.818, df=198	0.001*	63.40±5.12	2.342, df=198	0.020*	32.63±4.55	2.692, df=198	0.008*
Urban area	100	49.78±6.46			61.73±4.96			31.11± 3.35		

Unpaired t test applied

P value < 0.05 was taken as statistically significant

विश्लेषण–ग्रामीण कला संकाय के विद्यार्थियों की दृश्य अधिगम शैली के मध्यमान (M=45.58) तथा शहरी कला संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान(M=49.78) मे 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया (पी मूल्य 0.001)। इनके श्रव्य अधिगम शैली के मध्यमानो मे (ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 63.40±5.12 तथा शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 61.73±4.96) भी सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर ज्ञात हुआ। (पी मूल्य 0.020)। कला संकाय के ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की गतिज अधिगम शैली के मध्यमान 32.63±4.55 तथा 31.11±3.35 प्राप्त हुआ। जिनमे सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर ज्ञात हुआ (P=0.008)। अतः शून्य परिकल्पना H02–उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। अस्वीकृत की गई।

तालिका 3: उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों कीदृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

(N-200)

Visual learning Style					auditory learning Style			Kinesthetic learning Style		
Residence	No.	[Mean±SD]	't' value	P value	[Mean±SD]	't' value	P value	[Mean±SD]	't' value	P value
Rural area	100	43.98±4.83	-12.652, df=198	0.001*	55.67 ±6.49	-6.563, df=198	0.001*	33.88±6.07	3.049, df=198	0.003*
Urban area	100	51.98±4.08			61.18 ± 5.32			31.74±3.52		

Unpaired t test applied

P value < 0.05 was taken as statistically significant

विश्लेषण

वाणिज्य संकाय के ग्रामीण विद्यार्थियों की दृश्य अधिगम शैली का मध्यमान 43.98 ± 4.83 तथा शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 51.98 ± 4.08 प्राप्त हुआ जो कि 0.05स्तर पर सार्थक पाया गया (पी मूल्य 0.001)। ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की श्रव्य अधिगम शैली के मध्यमान क्रमश 55.67 ६ 6.49 तथा 61.18 ± 5.32 ज्ञात हुआ (पी मूल्य 0.001)। इन विद्यार्थियों मे गतिज अधिगम शैली के (ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 33.88 ± 6.07 तथा शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 31.74 ± 3.52) मध्यमानों मे सार्थक पाया गया (P=0.003)। अतः शून्य परिकल्पना H03– उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की दृश्य, श्रव्य और गतिज अधिगम शैली मेकोई सार्थक अंतर नहीं है। अस्वीकृत की गई।

व्याख्या

शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि शहरी विज्ञान संकाय के विद्यार्थी अधिगम हेतु दृश्य एवं गतिज अधिगम शैली का उपयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते है। जबकि ग्रामीण परिवेश के विज्ञान संकाय के विद्यार्थी श्रव्य अधिगम शैली का उपयोग शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते हैं। इसी प्रकार शहरी कला संकाय के विद्यार्थी दृश्य अधिगम शैली का उपयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते हुए पाए गए। कला संकाय के ग्रामीण विद्यार्थी श्रव्य और गतिज अधिगम शैली का उपयोग शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते हुए पाए गए। वाणिज्य संकाय के शहरी विद्यार्थी दृश्य और श्रव्य अधिगम शैली का उपयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते हैं।जबकि गतिज अधिगम शैली का उपयोग ग्रामीण विद्यार्थी, शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते है।

शोध निष्कर्ष

शोध परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विज्ञान संकाय, कला संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में संवेदी अधिगम शैली यथा दृश्य, श्रव्य एवं गतिज के उपयोग में सार्थक अंतर पाया जाता है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि अधिगम शैली प्राथमिकताएं व्यक्तिक भिन्नता से संबंधित तथ्य है। प्रत्येक विद्यार्थी जानकारियो, ज्ञान आदि को ग्रहण करने के लिए अपनी ज्ञानेंद्रियों का उपयोग करता है, लेकिन ज्ञानेंद्रियों के उपयोग में भी प्रत्येक की कोई न कोई प्राथमिकता रहती है जिसमें वह सहजता अनुभव करता है। जैसे कुछ विद्यार्थी किसी नए ज्ञान को देखकर सीखना चाहते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थी सुनकर ज्ञान ग्रहण करना चाहते हैं और कुछ स्वयं क्रियाशील होकर सीखना पसंद करते हैं। इस प्रकार विभिन्न वस्तुओं, सूचनाओं या जानकारियों को ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी का जो संवेदी अंग प्रभावी रूप से उस तरफ आकर्षित होता है वही उसकी अधिगम शैली प्राथमिक संवेदी अधिगम शैली बन जाती है।

इसी के साथ विभिन्न सकायों के शहरी व ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में अंतर होने का एक कारण यह भी हो सकता है कियदि शिक्षक अध्यापन कार्य के दौरान तथ्यों और सूचनाओं को स्पष्ट करने के लिए चित्र, मानचित्र,चार्ट, स्लाइड, फिल्म, रेखाचित्र, विभिन्न रंगों की चॉक आदि का प्रयोग अधिक करते हैं तो उनके विद्यार्थियों की दृश्य संवेदी अंग अधिक सक्रिय हो जाते हैं जिससे वे दृश्य अधिगमकर्ता बन जाते हैं। इसी प्रकार यदि शिक्षक अध्यापन हेतु केवल व्याख्यान विधि का उपयोग करते हैं तो उनके विद्यार्थियों की श्रव्य ज्ञानेंद्रिय अधिक सक्रिय हो जाती है जिससे उनके विद्यार्थी श्रव्य अधिगमकर्ता बन जाते हैं और यदि शिक्षक अध्यापन हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, वर्किंग मॉडल, वास्तविक जीवन के उदाहरण, प्रदर्शन खेल, अभिनय, नाटक आदि द्वारा अध्यापन करवाते हैं तो उनके विद्यार्थी गतिजअधिगम कर्ता बन जाते है। विद्यार्थियों की अधिगम शैलियां स्थिर नहीं होती हैं। वे विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग अधिगम शैलियों का उपयोग करते रहते हैं और कभी भी अपनी कम प्रभावशाली अधिगम शैली को विकसित भी कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. अधिगम एवं शिक्षण (2017). शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, ISBN& 13–978–93–85740–70–1
2. बेस्ट,जे. डब्ल्यू. एवं कान्ह, जे. वी. (2011). रिसर्च इन एजुकेशन (दसवां संस्करण), नई दिल्लीःपी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि.।
3. बोहने,एल. एल. (2020). अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अंतर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिंदी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना। मुक्ता शब्द जर्नल, IX(XI)184–194
4. बोरा, पी. शोध पद्धतियां और सांख्यिकी. शोध विधियांः अर्थ,परिभाषा, उद्देश्य और महत्व–II, गृहविज्ञान विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय.
5. बिस्ट और रानी (2017) लर्निंग स्टाइल प्रेफरेंसेस प्रोस्पेक्टिव साइंस आर्ट्स एंड कॉमर्स फीमेल टीचर्स।जय मां सरस्वती ज्ञानदायिनीःएन इंटरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी जर्नल, 3(1), 508–520. www.ijmsjournals.in

6. बीच, डी (2008). द पैराडॉक्सेस ऑफ स्टूडेंट लर्निंग प्रेफरेंसेस। एथनोग्राफी एंड एजुकेशन, 3(2),145–159
7. देवड़ा और मंसूरी (2014). विज्ञान एवं कला संकाय के B.Ed प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलईडी एजुकेशन, VIII(XIV),1–4.
8. फैट,जे.पी. (2000). अंडरस्टैंडिंग द लर्निंग स्टाइल्स ऑफ स्टूडेंट्स। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड सोशल पॉलिसी, 20(11), 31–45.http://do-doi-org/10-1108@01443330010789269
9. फ्लेचर, जेडी (1992).इंडिविजुअलाइज्ड सिस्टम ऑफ इंस्ट्रक्शन। इन मार्विन, सी.ए. एट अल।(ईडीएस।): एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल रिसर्च। मैकमिलन प्रकाशन कंपनी, न्यूयॉर्क,पीपी। 613–618।
10. नजर, ए.ए. (2017).स्टडी ऑफ लर्निंग स्टाइल मैंने प्रेफरेंसेस अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर जेंडर एंड प्लेस ऑफ लिविंग। स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर इंटर डिसीप्लिनरी स्टडीज।4/37, 9159–9164.www.srjis.com
11. नेत्रावती और दलिया, बी. (2019)। द कंपैरेटिव स्टडी ऑन रिलेशनशिप बिटवीन लर्निंग स्टाइल प्रेफरेंसेस एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग अंडर ग्रैजुएट आर्ट्स साइंस एंड कमर्स स्टूडेंट्स। इंटरनेशनल जर्नल आफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस इन्वेंशन, 8 (9), धारा 27–31।
12. निर्जेश और शर्मा, आर. (2018). जेंडर डिफरेंसेस इन लर्निंग स्टाइल अमंग सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज, 5(3), 1723–1725।
13. नजा,उमाली और अन्य (2019). द इनफ्लुएंस ऑफ लर्निंग स्टाइल्स ऑन एकेडमिक परफारमेंस अमंग साइंस एजुकेशन अंडर गग्रेजुएट्स एट द यूनिवर्सिटी ऑफ कैलाबर। एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यूज, 14 (17), 618–624. DOI: 10.5897/ERR2019.3806
14. राठौड़, ए. एवं नतालिया,पी.(2019). विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय के विद्यार्थियों द्वारा अधिगम शैलियों को दी जाने वाली प्राथमिकताएं. संकल्प पब्लिकेशन, आईएसबीएन 9388660501.
15. रीफ, जे.सी. (1992) लर्निंग स्टाइल्सण् व्हाट रिसर्च से टू द टीचर सीरीज। नेशनल एजुकेशन एसोसिएशन, वाशिंगटन डीसी।
16. रवांडाले, टी., अच्युतन, एस. एट अल (2020)। लर्निंग स्टाइल प्रेफरेंसेस अमंग द अर्बन एंड रूरल स्कूल चिल्ड्रन। नेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी फार्मेसी एंड फार्मोकोलॉजी, 10(5), 379–381।
17. स्मिथ, पी.जे., और डाल्टन, जे. (2005). गेटिंग टू ग्रिप विद लर्निंग स्टाइल।